

Dr. Sunil K. Suman
Assistant Professor (Guest)
D.B. College Jyotiagar
Dept. of Psychology

Study material
B.A. Part - I (H)
Paper - 1st
Date: - 23-05-2020

Reasoning

Inductive and Deductive Reasoning.

- Q. What is Reasoning, Explain the Inductive & Inductive Reasoning. (तर्क क्या है, आभासतमक तर्क एवं निवामनात्मक तर्क की व्याख्या की:-)

तर्क एक प्रकार का वास्तविक चिन्तन है (Realistic thinking)। हम यह कह सकते हैं कि तर्क चिन्तन की सबसे उच्च अवस्था है। व्यक्ति तर्क के माध्यम से अपने चिन्तन को क्रमबद्ध (Systematic) बनाता है तथा तर्क वितर्क के आधार पर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। जैसे कि अनुसार तर्क चिन्तन की वह प्रक्रिया है जिसमें निष्कर्ष (Inference) होता है अथवा सामान्य नियमों के आधार पर समस्या समाधान होता है। जैकब रेबर (Reber, 1985) ने तर्क के दो अर्थ बताये हैं सामान्य अर्थ में तर्क एक प्रकार का चिन्तन है जिसकी प्रक्रिया तार्किक (Logical) तथा संगत (coherent) होती है, तथा विशिष्ट अर्थ में तर्क समस्या समाधान व्यवहार है जहाँ अच्छे तरह से निर्मित उपकल्पनाओं को क्रमबद्ध रूप से जाँच की जाती है तथा समाधान तार्किक ढंग से (deduce) किया जाता है। अतः रेबर के विचार से स्पष्ट है कि तर्क में व्यक्ति किसी घटना या विषय के पक्ष में तथा विपक्ष में तर्क करते हुए एक परिणाम पर पहुँचता है। तर्क की प्रक्रिया व्यक्ति में उस समय तीव्र हो जाती है जब व्यक्ति में निपटारी शक्ति की अधिकता होती है तथा

उसके मानितत्व में संप्रत्यक्ष वन चुके होते हैं।
बालकों में इन दोनों शक्तियों के अभाव में तर्क
कार्य की क्षमता कम होती है। तर्क के लिए
कल्पनाशक्ति की भी आवश्यकता होती है तथा तर्क
शक्ति का विकास धीरे धीरे होता है।

①

आगमनात्मक तर्क

Inductive Reasoning:-

आगमनात्मक तर्क ऐसे तर्क को कहा जाता है जिसमें
व्यक्ति दिए गए तथ्यों में अपनी ओर से नये तथ्यों
को जोड़कर एक निश्चित तर्क पर पहुँचता है। जबकि
व्यक्ति नये तथ्यों को दिए गए तथ्यों में नहीं जोड़ता है
तब तर्क समर्थन का समाधान नहीं होता एक (Ruch-
1967) के अनुसार "आगमनात्मक चिन्तन में चिन्तक
अपनी कल्पना के आधार पर कुछ ऐसे नये
चीजों को जोड़ता है जो प्रस्तुत ओपेडा से सीधे
ज्ञात नहीं कर लिए जा सकते हैं" इस प्रकार
के चिन्तन में सजनात्मक चिन्तन (Creative Thinking)
का प्रयोग अधिक होता है।

②

निगमनात्मक तर्क

Deductive Reasoning:-

निगमनात्मक तर्क ऐसे तर्क होते हैं जिसमें व्यक्ति
पहले से ज्ञात निष्कर्षों को एवं तथ्यों के आधार
पर एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचने की
कोशिश करता है। इस प्रकार के तर्क मानव एवं
पशुओं दोनों में पाया जाता है - निगमनात्मक तर्क
निम्न प्रकार के व्यायामों (Syllabus) के
आधार पर निकाले गए परिणाम में स्पष्ट रूप से
शामिल होते हैं।

उत्तर :- वह सभी लोग जिन्हें चॉकलेट
पसंद है, दयालु होते हैं।

अमित चॉकलेट पसंद करता है।
निष्कर्ष :- अमित बहुत दयालु है।

End.